जो दतिया और टीहरी के बीच में वेत्वाके बा० क० है बेरीनक़ होगया। दतिया से ७५ मील पू० अ० को झुकती चारखाड़ी, आमदनी ४००००० । दतिया से ८० मील अ० छतरपुर आमदनी ३००००० । दतिया से १२० मील अ० पू० को झुकता अजयगढ़, आमदनी ३२५००० । दतिया से ११० मील अ० पन्ना, आमदनी ४०००००, हीरे की खान है । दतिया से ३० मील ई० समथर, आमदनी ४५०००० और दतिया से १००मील अ० द० को झुकता बिजावर आमदनी २२५०००।—३—ग्वालियर अथवा सेंधियाकी अमल्दारी उ० सूबे अकबराबाद के सर्कारी ज़िले और धौलपुर और करौली के इलाक़े, पू० बुंदेलखंड भूपाल और सागर नर्मदा के सर्कारी ज़िले, प० जयपुर कोटा उदयपुर परतापगढ़ बांसवाड़ा और बड़ोदे के इलाक़े और उ० हैदराबाद और इन्दौर की अमलदारियां। बिस्तार ३३००० मील मु०। आमदनी ७८००००० रु० साल। राजधानी ग्वालियर २६° १५' उ० अ० और ७८° १' पू० दे० में है। क़िला सर्कार के क़ब्ज़े में है। वहां से २६० मील नै० द० को झुकता १३° ५१' उ० अ० और ७५° ३५' पू० दे० में सिप्रा नदी के द० क० उज्जैन (उज्जनी) (अवंती) का पुराना शैहर है बादशाही ज़माने में सूबे मालवा (मालवदेश) की राजधानी था। ग्वालियरके द० बेत्वन्ती (बेत्वा)नदीके द० क० भिलसा। असली नाम उसका विल्वेश और भद्रावत बतलाते हैं। ग्वालियर से ४०० मील द० नै० को झुकता ताप्ती के द० क० सूबे खानदेश की पुरानी राजधानी बुरहानपुर है। ४० मील द० नै० को झुकता काली सिंघ के द० क० पहाड़ के नीचे नरवर का पुराना शहर और क़िला है २६० मील नै० नीमच में सर्कारी फ़ौज़ की छावनी है। —४—भूपाल प०

सागर नर्मदा के सर्कारी ज़िले और बाक़ी तीन तरफ़ ग्वालिअर का राज। यह हिस्सा मालवे का पठानोंके दख़ल में है। विस्तार ७००० मील मु० आमदनी ९२ ००००० रु० साल। राजधानी भूपाल जहां नव्वाब रहता है * २३° १०` उ० अ० और ७७° ३०` पू० दे० में है। वहांसे २० मील प० नै० को भुकती सिहोर में सर्कारी फ़ौजकी छावनी है। —७—इंदौर अथवा हुलकर की अमल्दारी पू० ग्वालियर, उ० ग्वालियर और धार और देवास, प० बड़ोदा और द० खानदेश के सर्कारी ज़िले। लंबान चौड़ान इस इलाक़े का नापना कठिन है क्योंकि बीच बीच में दूसरे इलाक़ों से बिशेष करके ग्वालियर से बहुत बेतरह मिल रहा है। बिस्तार ८००० मील मु०। आमदनी २२०००० रुपया साल। राजधानी इंदौर २२° ४२` उ० अ० और ७५°५०` पू० दे० में है। सर्कारी फ़ौज की छावनी वहां से १० मी० द० मऊ में है। इंदौर से ४० मील द० नै० को झुकता नर्मदा के द० क० महेशर (महेश्वती) सहस्रबाहु की बस्ती बतलाते हैं महेशर से ५ मील पू० नर्मदाके उसी कनारे मंडलेशर है, और मंडलेशर से थोड़ी ही दूर पू० नर्मदा के द० क० ओंकारनाथ महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर है।—८—धार और देवास यह दोनों छोटे २ रजवाड़े हुलकर और सेंधिया की अमल्दारी के बीच में पड़े हैं। धारका बिस्तार १००० मील मुरब्बा, और आमदनी ४७५००० रु० साल। देवास की आमदनी कुछ न्यूनाधिक ४०००००। धार की राजधानी धारानगर २२° ३५` उ० अ० और ७५° २४` पू० दे० में और देवास की राजधानी देवास २२° ५६` उ० अ० और ७६° १०` पू० दे० में है। धार

* इन दोनों गद्दों पर बेगम है॥

से अनुमान १५ मी० द० ज़रा अ० को झुकता प्राय: २०० फुट समुद्र से ऊंचा, एक पहाड़ पर मांडू का मशहूर क़िला उजड़ पड़ा है। —०—बड़ोदा अथवा गायकवाड़ की अमल्दारी। हुलकर और सेंधिया की अमल्दारी के प० समुद्र पर्यन्त और उदयपुर और सिरोही के द० नर्मदा तक इसके बीच में बहुत जगह सर्कारी ज़िले भी आगये हैं। यह इलाक़ा सूबे गुजरात में है जिसको संस्कृत में गुर्जर देश कहते हैं। बिस्तार २४००० मील मु० से कम नहीं है। आमदनी अनुमान ७०००००० रु० साल। राजधानी बड़ोदा २२°२१` उ० अ० और ७३°२३` पू० दे० में बिस्वामित्र नदी के बा० क० बसा है। इस गुजरात में औरभी बहुत से राजा और नव्वाब हैं, पर उनके इलाक़े निहायत छोटे, यहां तक कि बहुतेरे उन में से एकही गांव के मालिक हैं, इसलिये हम ने उन सब को इसी अमल्दारी के साथ रखना मुनासिब समझा, बहुतेरे तो उन में से अब तक भी महाराज गायकवाड़ को कर देते हैं, और बहुतेरे सर्कारी की हिमायत में आगये हैं। गुजरात की प० सीमा पर द्वारिका का टापू, जिसे जगतखूंट भी कहते हैं। हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। गुजरात के प्रायद्वीप की द० सीमा के ऊपर समुद्र के कनारे हरना कपिला और सरस्वती इन ३ नदियों के संगम पर जूनागढ़ वाले नव्वाब की जागीर में पट्टन सोमनाथ बना है। उसी में सोमनाथ महादेव का प्रसिद्ध मंदिर था। सोमनाथ के उ० अनुमान ४० मील जूनागढ़ के पास रेवताचल पर्वत पर, जिसे गिरनार और गिरनगर भी कहते हैं, जैनियों का बड़ा तीर्थ है। खम्भात नव्वाब की जागीर बड़ोदे से ३५ मील प० समुद्र की खाड़ी के कनारे मही नदी के मुहाने पर बसा है।

नव्वाब को इस जागीर से साल में ३०००००रु० वसूल हो रहता है। —८—कच्छ, बड़ौदे के प० बा० को झुकता हुआ। यह इलाक़ा टापू की तरह सब से निराला बसा है। उ० उसे समुद्र की खाड़ी गुजरात से जुदा करती है, प० उसे सिंधु की एक धारा सिंध से जुदा करती है, और बाक़ी दोनों तरफ़ वह रन से घिरा है, कि जो उसे उ० सिंध के सर्कारी ज़िलों से और पू० गुजरात से जुदा करता है। रन की असल संस्कृत अरण्य है। अरण्य का अर्थ जंगल उजाड़ है, पर यह तो जंगल नहीं बरन खारे पानी और रेत का एक बड़ा भारी दलदल है, बिस्तार इस रनका ८००० मील मु० से कम नहीं, बरसात में सारा जल मग्न होजाता है, पर दूसरी ऋतोंमें बहुत जगह सूख भी जाता है। कच्छ का इलाक़ा पू० से प० को १६० मील लंबा और रन समेत उ० से द० ६५ मील चौड़ा है। आमदनी ८००००० रु० साल। राजधानी भुज २३° १५` उ० अ० और ६९°५२` पू० दे०में है। भुज से ३५ मील द० नै० को झुकता समुद्र के तट पर मंडवी बंदर है। —९—सिरोही। द० बड़ोदा पू० उदयपुर और प० और उ० जोधपुर। बिस्तार ३०००मील मु०। आमदनी १००००० रु० साल। राजधानी सिरोही २४° ५२`उ० अ० और ७३° १५`पू० दे० में है। वहां से १८ मील नै० आबू (अर्बुदाचल) के पहाड़ पर जो समुद्र से ५००० फ़ुट ऊंचा है, जैनियों के मंदिर करोड़ों रुपये लागत के बहुत उमदा बनेहैं। साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। —१०— उदयपुर अथवा मेवाड़ प० उसे अर्बली पहाड़ सिरोही और जोधपुर से जुदा करता है, उ० अजमेर का सर्कारी ज़िला, द० बड़ोदा डूंगरपुर बांसवाड़ा और परतापगढ़ और पू० बूंदी और सेंधिया

की अमल्दारी है विस्तार ११६०० मील मु०, आमदनी १२५०००० रु० साल। राजधानी उदयपुर २४°३२' उ० अ० और ७३°४४' पू० दे० में है। वहां से २२ मील उ० ई० को झुकता बन्नास नदी के द० क० श्रीनाथजी का प्रसिद्ध मंदिर, जिसे नाथद्वारा भी कहते हैं, हिन्दुओं का तीर्थ है। ७० मील पू० ई० को झुकता हुआ चितोड़ अथवा चीतौड़ का प्रसिद्ध पुराना क़िला पहाड़ पर उजड़ पड़ा है।—११—डूंगरपुर बांसवाड़ा और परतापगढ़ ये तीनों छोटे छोटे इलाक़े प्रायः दो दो लाख रुपये साल की आमदनी के उदयपुर के द० सेंधिया और गायकवाड़ की अमल्दारी के बीच में पड़े हैं। डूंगरपुर का विस्तार १००० मील मु०। उस्से पू० परतापगढ़ का विस्तार १५०० मील मु० इन दोनों के द० बांसवाड़े का विस्तार भी १५०० मील मु० इन तीनों की राजधानियां डूंगरपुर २३°५४' उ० अ० और ७३°५०' पू० दे० में परतापगढ़ २४°२' उ० अ० और ७४°५१' पू० दे० में और बांसवाड़ा २३ ३१ उ० अ० और ७४° ३२' पू० दे० में है।—१२—बूंदी, उदयपुर के पू० और उ०, कोटे के प०, और जयपुर के द०। विस्तार २२०० मील मु०। आमदनी ५००००० रु० साल। राजधानी बूंदी २५° २८' उ० अ० और ७५ ३० पू० दे० में है।—१३—कोटा उ० बूंदी के सिवाय कुछ दूर जयपुर से भी सरहद्द मिली हैं, बाक़ी सब तरफ़ सेंधिया की अमल्दारी है। विस्तार ६५०० मील मु०। आमदनी ४५००००० रु० साल। लेकिन इसमें से तिहाई मुल्क सर्कार ने वहां के दीवान राजराना ज़ालिमसिंह की औलाद को दिलवा दिया, वे अब कोटे के द० अ० को झुकता ५० मील झालरापाटन में रहते हैं। राजधानी कोटा २५° १२' उ० अ० और ७५° ४५'

पू० दे० में चंबल के द० क० है। ये ऊपर लिखे हुए दोनों रज-वाड़े अर्थात् कोटा और बूंदी हाड़ौती में गिने जातेहैं।—१४—टोंक बूंदी के उ० जयपुर की अमल्दारीसे घिरा हुआ १०००००० रु० सालकी आमदनी का इलाक़ा नव्वाब मीरख़ां की औलाद के क़ब्ज़े में है। राजधानी टोंक २६° १२' उ० अ० और ७५°३८' पू० दे० में है। कुछ थोड़ी सी ज़मीन नव्वाब की शिरोंज (शेर-गंज) के साथ कोटे और ग्वालियर की अमल्दारी के बीच में और नीमबड़ेहा मेवाड़ के दर्मियान है। सबका मिलाकर विस्तार १८०० मील मु० होता है।—१५—जयपुर अथवा ढुंढार द० टोंक बूंदी कोटा और करौली, उ० बीकानेर और अलवर, पू० भरतपुर प० जोधपुर किशनगढ़ और सर्कारी ज़िला अज-मेर का। विस्तार १५००० मील मु०। धरती बहुधा रेतल, उ० शेखावाटी में छोटे छोटे पहाड़ भी हैं। राजधानी जयपुर, (जयनगर) २६° ५५' उ० अ० और ७५° ३०' पू० दे० में बहुत क़रीने के साथ बसा है। वहां से ७५ मील अ० रणथंभोर का प्रसिद्ध मज़बूत क़िला है।—१६—करौली। उ० और प० जयपुर, द० ग्वालियर और पू० धौलपुर। विस्तार १९००मील मु०। आमदनी ५०००० रु० साल। राजधानी करौली २६° ३२' उ० अ० और ७६° ५५' पू० दे० में पुष्पेरो नदी के तट पर बसीहै।—१७—धौलपुर। प० करौली, द० ग्वालियर, उ० भरतपुर पू० सर्कारी ज़िला आगरे का। विस्तार १६२५ मील मु० आमदनी ७००००० रु० साल। राजधानी धौलपुर २६°४२' उ० अ० और ७७°४४' पू० दे० में चंबलके बा० क० है।—१८—भरतपुर। द० धौलपुर, उ० अलवर प० जयपुर, पू० आगरा और मथुरा के सर्कारीज़िले। विस्तार २००० मील मु०। आमदनी२००००००रु० साल। राजधानी

भरतपुर २७° १०` उ० अ० और ७७° २३` पू० दे० में हैं। वहां से १४ मील पर डीग में बहुत उमदा बाग़ है। एक मंज़िल द० नै० को झुकता बयाने का मशहूर क़िला एक पहाड़ी पर बेमरम्मत पड़ा है।—१९—अलवर अथवा माचेड़ी द० भरतपुर और जयपुर, प० केवल जयपुर, और पू० और उ० मथुरा और गुड़-गांवे के सर्कारी ज़िले। बिस्तार ३५०० मील मु०। आमदनी १८००००० रु० साल। मेवात का बहुतसा हिस्सा इसी इलाक़े में पड़ा है। राजधानी अलवर २७° ४४` उ० अ० और ७६° ३२` पू० दे० में है। —२०—किशनगढ़ पू० और द० जयपुर, और उ० और प० जोधपुर और अजमेर का सर्कारी ज़िला। बिस्तार ७०० मील मु०। आमदनी ३००००० रु०साल। राजधानी किशन-गढ़ २६° ३०` उ० अ० और ७४° ४३` पू० दे० में है।—२१—जोधपुर अथवा मारवाड़। पू० जयपुर सर्कारी ज़िला अजमेर का और उदयपुर, द० उदयपुर सिरोही और बड़ोदा, प० सिंध और जेसलमेर, और उ० जेसलमेर और बीकानेर। बिस्तार ३५००० मील मु०। आमदनी ७०००००० रु० साल। राजधानी जोधपुर २६° १८` उ० अ० और ७६° पू० दे० में है।—२२—बीकानेर। द० जोधपुर और जयपुर, उ० बहावलपुर और पटियाला, प० जेसलमेर, और पू० सर्कारी ज़िला हरियानेका। बीकानेर और जेसलमेर और बहावलपुर की अमल्दारियों के बीच बड़ा भारी रेगिस्तान है बिस्तार ७०००० मील मु०। आमदनी ६५०००० रु० साल। राजधानी बीकानेर २८° ५०` उ० अ० और ८३° २` पू० दे० में है।—२३—जेसलमेर। पू० बीकानेर, प० सिंध, उ० बहावलपुर, द० जोधपुर। बिस्तार १२००० मील मु०। आमदनी १००००० रु० साल। राजधानी जेसलमेर, २६° ४३` उ० अ०

और ७०° ५४` पू० दे० में है। ये ऊपर लिखे हुए पन्द्रहों इलाक़े अर्थात् सिरोही से जैसलमेर तक राजपुताने में गिने जाते हैं। —२४— बहावलपुर। द० जैसलमेर और बीकानेर, उ० पंजाब के सर्कारी ज़िले, प० सिंध और पू० बीकानेर और पटियाला। बिस्तार प्रायः २०००० मील मु०। आमदनी १५००००० रु० साल, नव्वाब के रहने की जगह अर्थात् राजधानी बहावलपुर। २९` १६° उ० अ० और ७१` २०° पू०दे०में सतलज के, जिसे वहां गर्रा कहते हैं, बा० क० बसा है, वहांसे ३०मील प० नै०को झुकता पंजनद के, जो चनाब से मिलने पर सतलज का नाम रह गया है, बा० क० उच्च का पुराना शहर है।—२५—अंबाले की अजंटी के ताबे रजवाड़े। बहावलपुर के पू० ये इलाक़े प० और प० द० कुछ दूर तक बीकानेर की अमल्दारी से मिले हैं बाक़ी सब तरफ़ सर्कारी ज़िलों से घिरे हैं। इन में सब से बड़ा इलाक़ा महाराजे पटियाले का, जो क़ौम के सिक्ख हैं, बहावलपुर की हद्द से लेकर पहाड़ों में शिमला तक चला गया है, पर बीच बीच में दूसरे इलाक़े भी आगये हैं। बिस्तार ४५०० मील मु०। आमदनी २०००००० रु० साल। राजधानी पटियाला ३०° १६` उ० अ० और ७६° २२` पू० दे० में है बहावलपुर की हद्द की तरफ़ लुधियानेसे ७५ मील नै० बटिंडेका क़िला है उसी के गिर्दनवाह को लखी जंगल कहते हैं, जहां के घोड़े मशहूर हैं। पटियाले से २५ मील उ० सरहिन्द है। बाक़ी रजवाड़े जिनके रईसों को अपने इलाक़े में दीवानी फ़ौजदारी का इख़्तियार हासिल है, इस अजंटी में नाभा जींद मालेर कोटला फ़रीदकोट ममदोत बूढ़िया छिछरौली और रायकोट हैं। बिस्तार इन सबका २३०० मील

मु० । इनमें नाभाजींद और मालेरकोटला ये तीनों तो तीन तीन लाख रुपये साल की आमदनी के हैं, और बाक़ी सब इलाक़े बहुत छोटे छोटे हैं । मालेरकोटला फ़रीदकोट और ममदोत में मुसल्मानों की अ़मल्दारी है, तीनों रईस नव्वाब कहलाते हैं । नाभा पटियालेसे १५ मील प० बा० को झुकता । जींद ७० मील द० । और मालेरकोटला ३० मील बा० । फ़रीदकोट १०५ मील प० नै० को झुकता । ममदोत १३० मील प० बा० को झुकता । बूढ़िया ६० मील पू० अ० को झुकता । छिछरौली ६० मील प० । और रायकोट ४० मील ई० । —२६—कपूरथला अथवा सिख राजा आलूवालिये का इलाक़ा । सतलज और व्यासा के बीच चारों तरफ़ पंजाब के सर्कारी ज़िलोंसे छिपा हुआ । आमदनी २००००० रु० साल । राजधानी कपूरथला ३१° २४' उ० अ० और ७५° २१' पू० दे० में व्यासा नदी के बा० क० १० मील हटकर बसा है । —२७—रुहेलों का रामपुर मुरादाबाद और बरेली के सर्कारी ज़िलोंसे घिरा हुआ । बिस्तार ७०० मीलमु० । आमदनी १०००००० रु० साल रामपुर नव्वाब के रहने को जगह २८° ४६' उ० अ० और ७८° ५२' पू० दे० में कोशिल्या नदी के बां० क० बसा है । —२८—मनीपुर ब्रह्मपुत्र के पार हिन्दुस्तान की पू० हद्द पर है । प० और उ० सिलहट और आशाम के सर्कारी ज़िलों से और पू० और द० ब्रह्मा की अ़मल्दारी से मिला हुआ है । बिस्तार ७५०० मील मु० । आमदनी १०००० रु० साल से कम । राजधानी मनीपुर २४° २०' उ० अ० और ६४° ३०' पू० दे० में उसी नाम की नदी के द० क० है । अंगरेज़ इसे कसाइयों का मुल्क कहते हैं, क्योंकि ब्रह्मावाले उन्हें कासी पुकारते हैं, लेकिन बंगाली

उन्हें मघालू कहते हैं और वे अपनी क़ौम का नाम मोइते बतलाते हैं॥

अब इस से आगे दक्षिण के रजवाड़े लिखे जाते हैं। —१—हैदराबाद, यह इलाक़ा तापी नदी से लेकर, जहां वह सेंधिया की अमल्दारी से मिलता है, दक्षिण में तुंगभद्रा और कृष्णा नदी तक चला गया है। ई० की तरफ़ बरदा नदी प्राणहत्या में और प्राणहत्या गोदावरी में मिलकर इसे नागपुर के इलाक़े से जुदा करती है, और बाक़ी सब तरफ़ वह जंगल बंबई और मंदराज हाते के सर्कारी ज़िलों से घिरा हुआ है। जिस ज़मीन का नाम संस्कृत में तैलंग देश है, वह बहुत सी इस इलाक़े के अंदर आगई है* बिस्तार इसका प्रायः १००००० मील मु० है। और आमदनी १४०००००० रु० साल अनुमान की जाती है, पर नव्वाब के ख़ज़ाने में आधी भी नहीं आती। बादशाही ज़माने में यह एक सूबा गिना जाता था लेकिन अब हट्टों में बड़ा फ़र्क़ आगया। राजधानी हैदराबाद, जिसका नाम कभी भागनगर भी बतलाते हैं, १७°१५' उ० अ० और ७८° ३५' पू० दे० में मूसा नदी के द० क० बसा है। ६ मील प०-पहाड़ पर गोलकुंडे का प्रसिद्ध मज़बूत क़िला है, और ३ मील उ० सिकंदराबाद में सर्कारी फ़ौज की छावनी है। हैदराबाद से ३०० मील बा० औरंगाबाद है जो मुसल्मानों की बादशाहत में उस नामके सूबेकी राजधानी था, पुरानानाम उसका

*बराड़ का इलाक़ा नव्वाब ने सर्कार के हवाले कर दिया है और वह एक जुदा चीफ़ कमिश्नरी मुक़र्रर किया गया है उस में पूरब और पच्छिम दो कमिश्नरी और छ ज़िले अर्थात् उमरावती एलिचपुर ऊन अकोला बुलदना और बासिम हैं॥

गकं है। औरंगाबादसे०मील बा० दौलताबादका अद्भुत क़िला पहाड़ पर बना है, बनावट में इस से बढ़कर मज़बूत दूसरा क़िला अब तक सुनने में नहीं आया, पहले इसकानाम देवगढ़ था। दौलताबादसे०मील बा० इलूरू गांवके पास जिसे अंगरेज़ इलोरा कहते हैं, एक मील लंबे अर्द्ध चंद्राकार पहाड़ को काटकर महा अद्भुत मन्दिर बनाये हैं। हैदराबादसे ८३ मील बा० बिदर (*बिदर्भ) का पुराना शहरहै। बादशाही अमल्दारी में उसके साथ उसी नामका एक सूबा गिना जाता था। हैदराबाद से १३५ मील उ० धा०को झुकता गोदावरी के बा० क० नांदेड़ जो किसी समय उस नाम के सूबे की राजधानी था सिक्खोंका तीर्थ है। —२—मैसूर हैदराबाद के द० चारों तरफ़ सर्कारी ज़िलों से घिरा हुआ। बिस्तार ३०००० मील मु०। आमदनी ७०००००० रु० साल। राजधानी मैसूर (महेशुर) जिसका शुद्धनाम महिषसुर बतलाते हैं १२°१८` उ० अ०,७६° ४२` पू० दे० में है। वहां से ८ मील उ०श्रीरंगपट्टन है, और ७० मील ई० बंगलूर की छावनी है। इख़्तियार इस इलाक़े में बिलकुल साहिब कमिश्नर का आमदनी हुकूमत का ख़र्च काटकर राजा को दी जाती है*कुड़ग का सर्कारी इलाक़ा भी मैसूर और कानडे के बीच में इसी कमिश्नर के ताबे है, परकांडे में एक असिस्टंट रहता है।—३— कोच्ची अथवा कच्छी, जिसे अंगरेज़ कोचीन कहते हैं, मैसूर के द०। प० समुद्र द० त्रिवां-कोडू बाक़ी दोनों तरफ़ सर्कारी ज़िले हैं। बिस्तार २०००मील मु०। आमदनी ५०००००रु० साल। राजधानी कोच्ची जिसका

* अब यह इलाक़ा राजा को हवाले करदेने का हुक्म हो गया है लेकिन राजा नाबालिग़ है॥

जिकर मलयवार के ज़िले में हुआ सर्कार के क़ब्ज़े में है। —४—त्रिवांकोडू अथवा तिरुवनंतपुर। उ० कोच्ची द० और प० समुद्र, और पू० सर्कारी ज़िले मथुरा और तिरुनेल्लू वलि के। बिस्तार ५००० मील मु०। आमदनी ४०००००० रु० साल। राजधानी त्रिविंद्रम, ८° ६` उ० अ० ७६° ३०` पू० दे० में है।—५— कोलापुर हैदराबाद के प० चारों तरफ़ सर्कारी ज़िलों से घिरा हुआ। बिस्तार ३५०० मील मु०। आमदनी १५००००० रु० साल राजधानी कोलापुर १६° १६` उ० अ० ७४° २५` पू० दे० में एक नदी के समीप पहाड़ों के बीच है। —६—सावंतबाड़ी कोलापुर के नै० और गोवे के उ० पश्चिमघाट और समुद्र के बीच। बिस्तार १०००० मील मु०। आमदनी २०००० रु० साल। राजधानी बाड़ी १५° ५६` उ० अ० ७४° पू० दे० में है। इंतिज़ाम इलाक़े में सर्कारी है, आमदनी हुकूमत का ख़र्च काटकर राजा को दी जाती है॥

सिवाय सर्कारी और हिन्दुस्तानी अमल्दारियों के, जिनका ऊपर वर्णन हुआ, कुछ थोड़ी २ सी ज़मीन हिन्दुस्तान में फ़रासीस डेनमार्क और पुर्टगाल के बादशाहों के भी दख़ल में है। फ़रासीसवालों के दख़ल में पटुच्चेरी, जिसे अंगरेज़ पांडुचेरी कहते हैं द० में पालार और कावेरी के मुहानों के बीच समुद्र के तट पर ११° ५५` उ० अ० ७६° ५१` पू० दे० में और कारीकाल समुद्र के तट कावेरी के मुहाने पर १०° ५५` उ० अ० ७६° ४४` पू० दे० में, और चंदर नगर बंगाले में गंगा के बा० क० २२° ५१` उ० अ० ८८° २३` पू० दे० में बसा है। ६२ गांव पटुच्चेरी के साथ हैं और १०० कारीकाल के इलाक़े में। सिवाय इसके थोड़ी थोड़ी सी ज़मीनें और भी चार पांच शहरों में हैं। आमदनी सबकी सन् १८३८ ई० में ३०९६३८ रु० साल ठहरी थी।

डेनमार्क के बादशाह के दख़ल में तिरकमबाड़ी समुद्र के तट
कावेरी की एक धारा के मुहाने पर १०°६०' उ० अ० ७६°५४'
पू० दे० में १३ गांवके साथ है अठारह बीस बीघे इस बाद-
शाह की ज़मीन बलेश्वर में भी है। पुर्टगालवालों के दख़ल
में गोवेका इलाक़ा सावंतबाड़ी कानड़ा पश्चिमघाट और समुद्र
के बीच में है। लंबा ६३ मील चौड़ा ३३ मील तक। आमदनी
६००००० रु० साल। राजधानी पुरानी अर्थात् गोवा १५°३०'
उ० अ० ७४° २' पू० दे० में अब बेरौनक़ होगयाहै, गवर्नर ५
मील प० समुद्र के तटपर पंजिम में रहता है॥

निदान इस भारत वर्षमें जो सब देश प्रदेश और नदी पर्वत हैं। थोड़ा बहुत उन सब का दर्शन होचुका, यदि उन्हें किसी दीवार पर लटकाये हुए नक़शे में देखो तो साफ़ नज़र पड़ जायगा कि ऊपर अर्थात् उत्तर में सिंधु नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र तक सरासर हिमालय पहाड़ की श्रेणी चली गई है, जिस में उत्तराखंड के सुन्दर ठंडे और अतिरम्य और मनोहर मुल्क बस्ते हैं शास्त्र में भी उसकी बड़ी प्रशंसा की है। उदासीन जनों के चित्त को उस से अधिक प्यारा दूसरा कोई स्थान नहीं है। इन पहाड़ों की जड़ में कोई तीस चालीस मील चौड़ा बड़े भारी घने जंगलों से घिरा हुआ वह स्थानहै जिसे तराई कहते हैं। गर्मी और बरसात में इस तराई की हवा, विशेष करके नयपाल से नीचे नीचे, ऐसी बिगड़ जाती है कि बहुधा पशु पक्षी भी अपनी जान बचाने के लिये वहां से निकल भागते हैं। बायें हाथ, अर्थात् पश्चिम को जोधपुर, जेसलमेर, बीकानेर, और सिंध और बहावलपुर के वे हिस्से, जो सतलज और सिंध के कनारों से दूर हैं रेगिस्तान के पट-

पर मैदान में बसे हैं, जहां पानी भी कम और तृण बीरुध का भी अभाव, जिधर देखो समुद्र की लहरों की तरह बालू के टीले दिखलाई देते हैं। जब गर्मियों में लूयें चलती हैं और आंधियां आती हैं और वह बालू गर्म होकर हवा में उड़ती है, तो मानों बदन पर छर्रे बरसने लगते हैं, देखते ही देखते टीले उड़कर एक जगह से दूसरी जगह इकट्ठा होजाते हैं, अक्सर आदमी इस तरह के ख़तरे में आये हैं और रेतके नीचे दब कर मर गये हैं। वहां सिवाय ऊंट के और किसी भी सवारी का गुज़र नहीं हो सक्ता, बहुधा मुसाफ़िर लोग रात को तारों के निशान से चलते हैं, नहीं तो रेगिस्तान में सड़क पगडंडी वस्ती पेड़ इत्यादि चीज़ोंका आसरा और पता कुछ भी नहीं मिलता, केवल कहीं कहीं फोक झड़ बेरी आक और करील अवश्य नज़र पड़ जाते हैं। अर्बली पहाड़, जो सिरोही और जोधपुर को उदयपुर.सर्कारी ज़िले अजमेर और किशनगढ़ से जुदा करता शेखाबाटी और अलवर की अमलदारी में होता हुआ दिल्ली के पास जमना के कनारे तक चला गया है, इस मरुदेश की पूर्व सीमा है। दहने हाथ अर्थात् पूर्व की तरफ़ सूबे बंगाला, समुद्र और हिमालय के बीच सीधा बट्टाढाल, जिस में पहाड़ तो क्या कहीं पत्थर का रोड़ा भी देखने को नहीं मिलता, नदियोंकी बहुतायत से ऐसा सेराब है कि बरसात में प्राय: आधेसे अधिक जलमग्न होजाता है, आबादी बहुत धरती उपजाऊ पर्ले सिरे की, धान हर तरफ़ लहलहाते हैं। पूर्व भाग में बर्म्हा की सहद्द पर ऐसे सघन और अगम्य जंगल पड़े हैं कि जैसा उत्तर में इस देशको हिमालय से बचाव है वैसाही इधर इन जंगलों की मानों

दीवार खड़ी है, शत्रु उस राह से कदापि नहीं आसक्ता। निदान यह बंगाले का मैदान नदियों से सिंचा हुआ गंगा के दोनें तरफ़ हिमालय और बिंध्य के बीच हरिद्वार तक चला गया है, इस में गंगा यमना के बीच जो देश पड़ा है उसे अंतरबेद और दुआबा भी कहते हैं, और येही दो चार सूबे अर्थात् दिल्ली आगरा अवध और इलाहाबाद यथार्थ मध्यदेश, अर्थात् असली हिन्दुस्तान हैं। वायु कोनमें सिक्खों का मुल्क पंजाब है, जिसके पांचों दुआबे जिन २ नदियों के बीच में पड़े हैं उन दोनों नदियोंके नाम के हर्फ़ोंसे पुकारे जाते हैं, जैसे ब्यासा और सतलज के बीच में दुआबेबस्त जालंधर, ब्यासा और रावी के बीच में दुआबेबरी, रावी और चनाब के बीच में दुआबेरचना, झेलम और चनाब के बीच में दुआबेजच, और झेलम और सिंधु के बीच सिंधुसागर दुआब मध्य में बिंध्याचल के तटस्थ नर्मदा और शोण के कनारों पर और फिर शोण के कनारे से सूबे उड़ेसा और नागपुर के बीच में गोदावरी तक वे सब जंगल और झाड़ झंखाड़ और उजाड़ पड़ेहैं जिनमें भील गोंद धांगड़ कोल चुवाड़ और संठल इत्यादि असभ्य अर्द्ध बनमानस तुल्य प्राय: जंगली मनुष्य बसतेहैं। नीचे नर्मदा पार दक्षिण देश, पूर्ब और पश्चिम घाटों के बीच, एक चबूतरा सा उठा हुआ, ज्यों ज्यों दक्षिण गया ऊंचा होतागया यहां तक कि मैसूर की धरती प्राय: ३००० फ़ुट समुद्रसे बलंद है, और बलंदी के सबब मौसिम भी वहां अच्छा रहता है, गर्मी की शिद्दत नहीं होती। यह ऊंचा देश दोनों घाटों के बीच कृष्णा नदी से दक्षिण बालाघाट कहलाता है, और घाटों से उतरकर समुद्रकी तरफ़ जो नीचा देश है वह पाईं घाट।

असल में कर्नाटक उसी बालाघाट का नाम था, पर अब अंगरेज़ लोग पाईंघाट को भी उसी नाम से पुकारते हैं, और कृष्णा के मुहाने से कावेरी के मुहाने तक समुद्र के तटस्थ देश को कारोमंडल भी कहते हैं, कारोमंडल चोलमंडल का अपभ्रंश मालूम होता है कि जो नाम अब तक भी वहांवालों की ज़ुबान पर जारी है। इस कनारे समुद्र के निकट धरती बिलकुल रेतल और ऊसर है। कृष्णा पार दक्षिण देश में मुसल्मानों का राज्य पक्का न जमने के कारन वहां अब भी बहुतेरी बातें असली हिन्दू धर्म की देख पड़ती हैं, मंदिर और शिवालय बहुत बड़े बड़े प्राचीन बने हुए, धर्मशाला और सदावर्त्त हर तरफ़ मुसाफ़िरों के लिये, ब्राह्मण बेदपाठी और अग्निहोत्री जगह जगह बहुतायत से और नाम नगर और ग्रामों के अहमद महमूद पर कम, अकसर वेही पुराने हिन्दी चले जाते हैं। यद्यपी हिसाब से प्राय: दो तिहाई मुल्क, अर्थात् प्राय: सात लाख मील मुरब्बा, अब भी हिन्दुस्तानियों के दख़ल में है, परंतु वह आबादी और आमदनी में सर्कारी मुल्क़ के आधे हिस्से की भी बराबरी नहीं कर सक्ता। सर्कारी अमल्दारी में नौ करोड़ आदमी बसते हैं, हिन्दुस्तानी अमल्दारी में कुल पांच करोड़। सर्कार के यहां पचास करोड़ रुपया तहसील होता है, हिन्दुस्तानियों को ग्यारह करोड़ भी पल्ले नहीं पड़ता। यह केवल नीयत की बर्कत है और इन्तिज़ाम की ख़ूबी है॥

॥ लंका॥

यह टापू हिन्दुस्तान के द० सेतबंध रामेश्वर के साम्हने है, इसी का नाम सिंहलद्वीप है, मुसल्मान सरन्दीप और अंगरेज़ सिलोन कहते हैं बौद्धों ने इसे ताम्रपर्णी के नाम से लिखा

है। लंबान २०० मील चौड़ान २०५ मील, घेरा ७५० मील। पहाड़ ८००० फुट तक ऊंचे। नदी सब से बड़ी महाबली गंगा २०० मील लंबी। अमल वहां अंगरेजों का। आमदनी ३३००००० रुपये साल। राजधानी कोलम्ब जहां गवर्नर रहता है, ६° ५' उ० अ० ८०° पू० दे० में उस टापू के प० समुद्र के तट पर बसा है। कोलम्ब से ६० मील ई० कांडी पुरानी राजधानी है। कोलम्ब से ४५ मील पू० अ० को झुकाता हमालुल पहाड़ पर, जिसे अंगरेज़ आदम का शिखर कहते हैं, दो फुट लंबा आदमी के पैर का एक निशान बना है। सिंहली कहते हैं कि वह बुद्ध के पैर का निशान है, और मुसल्मान उसे आदम के पैर का बतलाते हैं। मत वहांवालों का बौद्ध है॥

॥ बर्म्हा ॥

एशिया के अ० में हिन्दुस्तान के पू० ६° से २६° उ० अ० तक, और ९२° से १०४° पू० दे० तक। वहांवाले उसका नाम म्रन्मा बतलाते हैं, ब्रह्मा बर्म्हा बर्मा इत्यादि सब उसी म्रन्मा का अपभ्रंश है। प० हिन्दुस्तान और बंगाले की खाड़ी पू० कम्बोज और चीन, उ० चीन और द० स्याम और समुद्र और मलाका। बिस्तार १६४००० मील मु०। नदी सब से बड़ी ऐरावती तिब्बत के पू० से निकलकर १८०० मील बहने के बाद कई धारा होकर समुद्र में मिलती है। राजधानी आइन्वा जिसे अंगरेज़ आवा और वहां वाले रत्नपुर भी कहते हैं, २१° ४५' उ० अ० ९६° पू० दे० में ऐरावती के बा० क० बसा है। अमल्दारी इस मुल्क में बौद्धमती राजा की है, और तहसील में वहां का राजा जो कुछ कि मुल्क में पैदा होता है, और जो कुछ कि बाहर से आता है, सब का दसवां हिस्सा लेता है। टेना

सेरिम्, अर्थात् मोलमीन, अराकान, पेगू इत्यादि इलाके अर्थात्
समुद्र के तटस्थ बर्म्हा का पू० भाग चटगांव से लेकर मलाका
तक, सर्कार अंगरेज़ के कब्ज़े में है उसमें तीन कमिश्नर मुक़र्रर
हैं, अराकान का कमिश्नर आवासे २०० मील नै०, आकयाब में
रहता है, मोलमीन का आवा से ४०० मील द० अ० को झुकता
मोलमीन में, और पेगू का आवा से ३०० मील द० पेगू में।
पेगू से ६० मील द० ऐरावती के द० क० रंगून का बंदर है॥

॥ स्याम ॥

जिसे बर्म्हावाले स्यान और शान कहते हैं १०° से १८° उ० अ० और ९९° से १०५° पू० दे० तक चला गया है। उ० और पू० बर्म्हा, द० स्याम की खाड़ी, और पू० कम्बोज। बिस्तार २५४००० मील मु०। राजधानी बंकाक १३° ४०° उ० अ० १०१° १० पू० दे० में मीनम् नदीके दोनों कनारों पर है, राजा बौद्धमती तिजारत भी करता है॥

॥ मलाका ॥

यह प्रायद्वीप, जिसे वहांवाले मलय देश कहते हैं, १° २२' से ६° उ० अ० तक चला गया है। तीन तरफ़ समुद्र से घिरा है चौथी तरफ़ अर्थात् उ० को उसे का नाम डमरुमध्य बर्म्हा के मुल्क से मिलाहै। लंबान ८०० मील चौड़ान १२० मील। इस मुल्कमें छोटे छोटे कई राज हैं। हाकिम वहां का सुन्नी मुसल्मान सुल्तान कहलाता है। राजधानी मलाका २° १४' उ० अ० १०२° १२' पू० दे० में समुद्र के तट पर सर्कार अंगरेज़ बहादुर के क़ब्ज़े में है। मलाका के अ० १२० मील के तफ़ावत पर सिंहपुर और बा० २४० मील के तफ़ावत पर

पुलोपिनांग ये दोनों टापू भी सर्कार अंगरेज़ बहादुर के दख़ल में हैं, इन्हींको हिन्दुस्तानी लोग काला पानी कहते हैं, अंगरेज़ पुलोपिनांग को प्रिन्स आफ़ वेल्स का टापू पुकारते हैं ॥

॥ कोचीन ॥

वहां के बादशाह के क़ब्ज़े में तीन मुल्क हैं, कोचीन टांकिंग अथवा एनम्, और कम्बोज जिसे अंगरेज़ कम्बोडिया कहते हैं। कम्बोज ८° से १५° उ० अ० तक और कोचीन ८० से १८° उ० अ० तक और टांकिंग १८° से २३° उ० अ० तक, १०५° और १०६° पू० देश के बीच चला गया है। उ० चीन, द० और पू० समुद्र प० स्याम बर्म्हा और चीन। बिस्तार १५०००० मील मु०। नदी सब में बड़ी कम्बोज चीन से निकली है, और १४०० मील बहकर समुद्र में गिरती है। ह्यू वहां के बादशाह की दारुस्सल्तनत अर्थात् राजधानी है॥

॥ चीन ॥

२१° ५५° उ० अ० तक और ७०° से १४२° पू० देशांतर तक। पू० तूरान, प० पासिफ़िक् समुद्र, उ० एसियाईरूस, द० हिमालय पहाड़ बर्म्हा और कोचीन। लंबान ४००० मील चौड़ान २००० मील। बिस्तार ५०००००० मील मु०। आमदनी ६००००००००, यद्यपि बस्तुतः इस बिस्तार में चार मुल्क बस्ते हैं, अर्थात् असली चीन तिब्बत तातार, जिसे माचीन और महाचीन भी कहते हैं, और कोरिया का प्रायद्वीप, लेकिन एक बादशाह के आधीन रहने के कारन अब ये सब एकही नाम से, अर्थात् चीन पुकारे जाते हैं। असली चीन उ० में तातार से मिला है और उसके पू० और द० पासिफ़िक् समुद्र की खाड़ियां हैं, नाम उनका पीली नीली और चीन की, और द० कोचीन और बर्म्हा

से और प० बर्म्हा और तिब्बत से घिरा है। तिब्बत हिमालय के उ० और फिर तिब्बत के उ० तातार है, अलताई का पहाड़ उसे उ० में रूस से जुदा करता है, प० तूरान है, और पू० असली चीन और समुद्र। कोरिया का प्रायद्वीप असली चीन के ई० पड़ा है। सिवाय इन मुल्कों के बहुत से टापू भी फ़ार्मोसा और लीयूं कीयू इत्यादि वहां के बादशाह के ताबे हैं। तातार में शामू अथवा गोबी का पटपर रेगिस्तान प्रायः १४०० मील लंबा होवेगा। तिब्बत में कैलास पर्वत हिमालय का टुकड़ा ३०००० फुट समुद्र से ऊंचा है। चीन और बर्म्हा के बीच में हिमालय की शाखा समुद्र पर्यन्त चली गई, पर ज्यों ज्यों पूर्व को बढ़ी नीची होती गई। नदियां बहुत हैं हुअंगहो तिब्बत और तातार के बीच रांयिको पहाड़ से निकलकर २६०० मील बहने के बाद समुद्र में गिरती है, और यङ्त्सो कायङ तिब्बत से निकलकर ३२०० मील बहने के बाद नानकिङ शहर से कुछ दूर आगे हुअंगहो से मिल जाती है। बादशाही नहर कांटन से पेकिन तक ८०० मील लंबी है। अमुर नदी २०००मील तातार में बहकर सघलियन के टापू के साम्हने समुद्र से मिल गई है। झीलें चीनमें पयंग तातार में नोरज़ैसां और पलकुसी, और तिब्बत में कैलास और हिमालय के बीच मानसरोवर और रावणह्रद, जिन्हेंमाणा अथवा मानतलाई और राकसतालभीकहते हैं मशहूर हैं। मानसरोवर १५ मील लंबी और ११ मील चौड़ी है चीन की दारुस्सिल्तनत पेकिन जिसे कोई पेचिन भी कहता है ४०° उ० अ० और ११६° पू० दे० में बसा है। तातार में यार्क़न्द पेकिन से २४०० मील प० और काशग़र यार्क़न्द से १५० मील वा० मशहूर शहर हैं। तिब्बत का बड़ा शहर लासा पेकिन

से १८०० मील ने० है। पहले ग़ैरमुल्कवालों को केवल कांटन के बंदर में तिजारत करने की इजाज़त थी लेकिन लड़ाई के बाद १८४२ ई० से अंगरेज़ों को समाय फूचूफू निङपो और शांघे इत्यादि और भी कई बंदरों में तिजारत करने की इजाज़त होगई। बादशाह वहां का बोद्धमती है॥

॥ जपान॥

चीन के पू० २६° ३५' और ४६° उ० अ० के दर्मियान जपान के टापू हैं। नीफ़न सिटकाफ़ और क्यूस्यू ये तीन तो बड़े हैं, और बाक़ी छोटे। सब से बड़ा नीफ़न कुछ ऊपर ८०० मील लंबा और ६० से १०० मील तक चौड़ा है। बिस्तार तीनों टापुओं का ६०००० मील मु०। आमदनी २८०००००८० रु० साल। राजधानी जेडो ३६° उ० अ० ४०° पू० दे० में है नदी और नहरें शहरके बीचसे बहती हैं। मत वहां वालों का भी बोद्धही है॥

॥ रशियाई रूस॥

रशियाई इस वास्ते कहते हैं, कि रूस का मुल्क कुछ तो रशिया में पड़ा है और कुछ यूरुप अर्थात् फ़रंगिस्तान में गिना जाता है, इसलिये रशियाई का बयान जो रशिया में पड़ा है रशिया के साथ और यूरुपी, अर्थात् फ़रंगिस्तान के रूस का वर्णन जो यूरुप में गिना जाता है फ़रंगिस्तान के साथ किया जावेगा, बरन इस बादशाहतका ज़ियादः बयान फ़रंगिस्तान ही के साथ होवेगा क्योंकि राजधानी इसकी पिटर्सबर्ग फ़रंगिस्तान में बसी है। जानना चाहिये कि रशियाई रूस, जो सिवाय ककेसस के कोहिस्तानी ज़िलों के ४८° से ७८° उ० अ० तक और ५६° पू० दे० से १७०° प० दे० तक चला गयाहै उ० उत्तर समुद्र से और द० चीन तूरान ईरान और रशियाई रूस से,

पू० पासिफ़िक समुद्र से और प०फ़रंगिस्तानी रूससे घिरा हुआ है। बिस्तार ३००००००मील मु० साइबीरिया इश्तराख़ान और ककेसस के कोहिस्तानी ज़िले ये तीन उसके बड़े हिस्से हैं। साइबीरिया यूरल पहाड़ से पासिफ़िक समुद्र तक चला गया है, उनके ने० डन और वलगा नदी और कास्पियन सी के बीच इश्तराख़ान और उसके ने० कास्पियन सी और ब्लाकसी के बीच ककेसस के कोहिस्तानी ज़िले हैं। पहाड़ों के दर्मियान इस मुल्क में अलताई और यूरल और ककेसस की श्रेणियां प्रसिद्ध हैं। इसी ककेसस को फ़ारसी में कोहक़ाफ़ कहते हैं। उसका अलबुर्ज़ नामी एक शिखर प्राय: १८००० फ़ुट समुद्र से ऊंचा है। अलताई इस मुल्कको तातार से और यूरल उसे फ़रंगिस्तान से जुदा करता है। सब में बड़ी नदी इस मुल्क में ओबी २५५० मील लम्बी है। लेना दोहज़ार मील लम्बी है। दोनों अलताई से निकलकर उत्तर समुद्र में गिरती हैं, और वलगा इस मुल्क को फ़रंगिस्तानी रूस से जुदा करती हुई कास्पियन सी में गिरती है। झील बेकल की ३५० मील लम्बी और ५० मील तक चोड़ी है। साइबीरिया के अ०-की तरफ़ कमस्कटका का प्रायद्वीप प्राय: ६०० मील लम्बा है, और उस में कई एक ज्वालामुखी पहाड़ भी हैं। जार्जिया के इलाके में कास्पियन सी के पश्चिम कनारे दरख़्त और पानी से ख़ाली एक पटपर में बाकू की महाज्वालामुखी है॥

॥ अफ़ग़ानिस्तान ॥

यह मुल्क हिन्दुस्तान और ईरान के बीच में २५° से ३०° उ० अ० तक और ५८° से ७२° पू० दे० तक चला गया है। द० समुद्र, उ० तूरान, पू० हिंदुस्तान और प० ईरान उसकी सीमा

है । ६०० मील पू० से प० को लंबा और प्राय: ८०० मील उ० से द० को चौड़ा है । बिस्तार ४६४००० मील मु० । इस मुल्क के तीन बड़े हिस्से हैं । उ० असली अफ़ग़ानिस्तान द० बलूचिस्तान और प० हिरात, अथवा खुरासान । हिमालय का श्रेणी जो सिन्ध के दहने कनारे इस मुल्क के उ० भाग में पड़ा है उसे यहांवाले हिन्दूकुश कहते हैं । नदियां होरमंद और फ़रह दोनों जरह की झोल में जो सोस्तान के दर्मियान प्राय: १०० मील लम्बी होवेगी गिरती हैं । होरमंद ६५० मील से अधिक लम्बी है । आमदनी कुछ न्यूनाधिक ५०००००० रु० साल । इस में ३४००००० तो काबुल कंदहार अर्थात् असली अफ़ग़ानिस्तान की और २०००००० नक़द और जिन्स मिलाकर हिरात की । बलूचिस्तान कुल ३००००० का मुल्क है । राजधानी काबुल ३४°१०` उ० अ० और ६६° १५` पू० दे० में समुद्र से कुछ कम ६५०० फुट ऊंचा कामा नदी के दोनों तरफ़ । ग़ज़नी, अथवा ज़ाबुल, काबुल से ७० मील द० । कंदहार (कन्धार) काबुल से प्राय: २०० मील नै० । हिरात काबुल से कुछ कम ५०० मील प० । क़िलआत, बलूचिस्तान के ख़ान के रहने की जगह, काबुल से ४२५ मील नै० द० को झुकता । क़िलआत से अनुमान २५० मील के लगभग द० नै० को झुकता, और जहां हिंगुल नदी का समुद्र से संगम हुआ है उस से ८० मील ऊपर, उसी नदी के कनारे दो पंहाड़ों के बीच एक गुफासी है उसी के ऊपर हिंगलाज देवी का छोटा सा कच्चा मन्दिर बना है ॥

॥ तूरान ॥

अथवा तुर्किस्तान, जिसे अंगरेज़ इंडिपेंडेंट टार्टारी अर्थात् स्वाधीन तातार कहते हैं, ३५° से ५२° उ० अ० तक और ५९°

से ७४° पू० दे० तक चला गया है। प० कास्पियन सी (बहरे ख़िज़र) एक बड़ी झील है, २५० मील चौड़ी और ६५० मील लंबी, बड़ी और खारी होने के कारण सी और बहर अर्थात् समुद्र कही जाती है। अलताई के पहाड़ तूरान को उ० रूस से, बिलूरताग के पहाड़ पू० चीनीतातार से और हिन्दूकुश के पहाड़ द० अफ़ग़ानिस्तान से जुदा करते हैं। ये सब पहाड़ एक दूसरे से जुड़े और हिमालय से मिले हुये हैं। द० तरफ़ तूरान की सरहद्द जेहूं पार बराबर कास्पियन तक ईरान से मिली है। बिस्तार १००००० मील मु०। आमदनी ४८००००० रु० साल। जेहूं और सेहूं प्रख्यात नदियां हैं। जेहूं जिसे अंगरेज़ी में आक्सस और संस्कृत में चक्षुस् कहते हैं १३०० मील और सेहूं ६०० मील बहती है। झील अराल को, जिसे बहरे ख़ारज़्म भी कहते हैं, २०० मील लंबी और ७० मील चौड़ी है। जेहूं और सेहूं दोनों बिलूरताग पहाड़ से निकल कर इसी झील में गिरती हैं। बदख़्शां का इलाक़ा प० में हिन्दूकुश के उ० है। राजधानी बुख़ारा मुग़द नदी के दोनों कनारोंपर बसा है। समर्क़न्द वहां से १५० मील पू० है। यद्यपि यह सारा मुल्क बुख़ारे की सल्तनत में गिना जाता है, लेकिन उसके दर्मियान ख़ीवा अथवा ख़ारज़्म और ख़ोक़न्द अथवा कोकन ई० को और कुंदुज़ प० को, इन तीनों इलाक़ों में ख़ान अर्थात् हाकिम केवल नाम मात्र को बुख़ारे के आधीन हैं * ॥

---

* अब बहुत सा इलाक़ा रूसियोंके क़बज़े में चला गया है और रूसियोंने बुख़ाराके बादशाहको बिल्कुल दबा लिया है॥

॥ ईरान ॥

२५° से ४०° उ० अ० तक और ४४° से ६५° पू० दे० तक। उ० रूस और तूरान और कास्पियन सी, द० ईरान की खाड़ी (दर्याइ उम्मां) पू० अफ़ग़ानिस्तान, प० एशियाई रूम। बिस्तार ५६०००० मील मु०, आमदनी ३००००००० रु० साल नीचे इस मुल्क के सूबों के साम्हने उनके बड़े शहरों का नाम लिखते हैं॥

नम्बर	नाम सूबों का	नाम शहरों का
१	आज़रबायजान रूम और रूस की हद्द पर	तबरेज़,
२	गुर्दिस्तान आज़रबायजान के द०	कर्मांशाह
३	लूरिस्तान गुर्दिस्तान के द० ..	खुर्रमाबाद
४	खुज़िस्तानलूरिस्तानकेद०समुद्रतक	दिज़फ़ुल
५	फ़ार्स खुज़िस्तानके पू०	शीराज़
६	लारिस्तान फ़ार्सके द० समुद्रतक ..	ला र
७	कर्मां फ़ार्स के पू०	कर्मां
८	खुरासान कर्मां के उ०	मशहिद
९	इराक़ फ़ार्स के उ०	इस्फ़हान। तिहरान्
१०	माज़ंदरान् इराक़ के उ०	सारी
११	ग़ीलां माज़ंदरान् के बा०	रश्द
१२	अस्तराबाद ग़ीलां के उ०	अस्तराबाद

हुर्मुज़ और करक इत्यादि कई टापू, जो ईरान की खाड़ी में हैं, इसी बादशाहत में गिने जाते हैं। राजधानी तिहरान् ३५° ४०` उ० अ० ५०° ५२` पू० दे० में है। इस्फ़हान पुरानी

राजधानी वहांसे २५० मील द० ज़िंदरूद के कनारेहै। और ५००मील द० शीराज़ है। शीराज़ से ३० मील बा० अतिप्राचीन राजधानी इस्तख़र है, जिसे अंगरेज़ पर्सिपोलिस कहते हैं, अब तक निशान मौजूद हैं॥

॥ अरब ॥

यह प्रायद्वीप एशिया के नै०में १२° ३०` से ३४० ३०` उ० अ० तक और ३२° ३०` से ६०° पू० दे० तक चला गया है। उ० रूस की सल्तनत, पू० ईरान की खाड़ी प० रेडसी और स्वीज़ का डमरूमध्य द० अरब का समुद्र। बिस्तार १०००००० मील मु०। हिजाज़ का इलाक़ा तो जिस में मक्का और मदीना है रूम के बादशाह के ताबे है और बाक़ी सारा मुल्क जुदा जुदा हाकिमों के तहत में बटा हुआ है,। वे हाकिम शेख़ शरीफ़ ख़लीफ़ा अमीर और इमाम कहाते हैं,। यह मुल्क बिल्कुल रेगिस्तान है, समुद्र के कनारे कुछ कोहिस्तान भीहै, पर पहाड़ ऊंचे नहीं। रेड़सी के उ० कनारे से पासही तूरका पहाड़ है। बहरैन का टापू ईरान की खाड़ी में इसी मुल्क के साथ गिना जाता है। अरब के द० कनारे से २४० मील अफ़्रीका के पू० तट से निकट सकतरा का टापू है। मक्का२१° २८` उ० अ० और ४०° १५` पू० दे० में बसा है मुसल्मानों का बड़ा तीर्थ है वहां से २०० मील उ० बा० को झुकता मदीना है। अदन का क़िला जो रेडसी के मुहाने पर यमन के इलाक़े में है कुछ दिनों से सर्कार अंगरेज़ो के क़ब्ज़े में आगया है॥

॥ एशियाई रूम ॥

इसको एशियाई इसवास्ते कहते हैं कि रूम की सल्तनत एशिया और फ़रंगिस्तान दोनों खण्डोंमें पड़ीहै यहां उसी भाग का

वर्णन होता है जो एशिया में है। राजधानी इस सल्तनत की कुस्तुंतुनिया फ़रंगिस्तान में है। फ़रंगिस्तान वाले इस मुल्क को एशियाटिक टर्की अर्थात् एशियाईतुर्किस्तान पुकारतेहैं परन्तु इस में शाम की सारी विलायत और अरब और ईरान केभी हिस्सेहैं॥

निदान यह एशियाईरूम ३०°से ४२`उ० अ०तक २६°से ४८` पू० दे० तक चला गया है पू० ईरान द० अरब प०मेडिटरेनियन और उ०डार्डिनल्स मार्मुरा बास्फोरस और ब्लाकसी नाम समुद्र की खाड़ियां हैं बिस्तार ४६०००० मील मु०। शाम का मुल्क फ़ुरात नदी और मेडिटरेनियन केबीच में पड़ा है, उसी के द० भाग में फ़िलिस्तीन है जिसे ईसाई लोग पवित्र भूमि कहते हैं। फ़ुरात के पू० दियारबक्र है, उसका द० भाग अरबी इराक़ और पू० भाग गुर्दिस्तान अथवा कुर्दिस्तान कहलाता है, और उसके उ० तरफ़ रूम का इलाक़ा है जिसे अंगरेज़ आर्मिनिया कहते हैं। पहाड़ों में टारस और अरारात (जूदी) मशहूरहैं टारस की श्रेणी मेडिटरेनियन के तट से निकटहीं निकट ख़लदूनिया अंतरीप से फ़ुरात नदी तक चली गई है, और अरारात रूम में रूस और ईरान की सहद्द पर १०००० फुट समुद्रसे ऊंचा है। नदियों में दजला और फ़ुरात, जो बसरे से कुछ दूर ऊपर मिलकर शातुल् अरब के नाम से ईरान की खाड़ी में गिरतीहैं नामी हैं। फ़ुरात १५०० मील लंबी है और दजला ८००मील। झील डेडसी, जिसे बहरेलूत भी कहते हैं, फ़िलिस्तीन के द० भाग में प्रायः ५० मील लंबी है रोड्स और सिप्रस के टापू मेडिटरेनियन में इसी बादशाहत के ताबेहैं। बग़दाद ३३° २०` उ० अ० ४४° २४` पू० देशमें दजला नदीके दोनों कनारों पर मशहूर शहर है उससे ४०५ मील प० बा० को झुकता

हलब है। ४०५ मील प० पारफ़ार नदी के दोनों कनारों पर दमिश्क है। ५२५ मील बा० उ० को झुकता रूम के इलाक़े में अर्ज़रूम है। और प० सीमा पर समुद्र के कनारे समिर्ना बसा है। बसरा बग़दाद से २८० मील अ० शातुल् अरब के द० कनारे है। मूसिल २६० मील बा० दजला के द० क० बसा है। इसी के साम्हने जहां अब नूनिया गांव बस्ता है पुराने शहर नेनवा का निशान देते हैं। बेतुल मुक़द्दस जिसे अंगरेज़ यरू-ज़लम अथवा उर्शलीम कहते हैं फ़िलिस्तीन अर्थात् किनआं के इलाक़े में डेडसी झील और मेडिटरेनियन के बीच में है। बग़दाद से ५० मील द० फुरात के दोनों कनारों पर हिल्ला गांव के पास बाबिल के पुराने शहर का निशान देते हैं। कर्बला बग़दाद से ५० मील ने० फुरात पार है। डार्डेनलस के तटस्थ ३०४० बरस गुज़रे ट्राय का वह प्रसिद्ध क़िला था जिसे यूनानियों ने १२ बरस की लड़ाई में तोड़ा था॥

इति॥

नक़शे में जल्द पता लगने के वास्ते हिन्दुस्तान के बड़े अथवा नामी शहर और स्थानों का अक्षांश और देशान्तर ॥

नाम स्थानों का		उत्तर अक्षांश		पूर्व देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
अजन्ता	..	२०	३४	७५	५३
अजमेर	..	२६	३१	७४	२८
अजयगढ़	..	२४	५०	८०	३
अटक	..	३३	५६	७१	५७
अमरकण्टक	..	२२	५५	८२	०
अमरोहा	..	२९	०	७८	४२
अमृतसर	..	३१	३३	७४	४८
अम्बाला	..	३०	१९	७६	४४
अयोध्या (फ़ैज़ाबाद)	..	२६	४८	८२	४
अरगांव	..	२१	०	७७	३
अलमोरा	..	२९	३५	७९	४४
अलवर	..	२७	४४	७६	३२
अलीगढ़ (कोयल)	..	२७	५६	७७	५९
असीरगढ़	..	२१	२८	७६	२३
असाई	..	२०	१६	७५	५२
अहमद नगर	..	१९	५	७४	५५
अहमदाबाद	..	२३	१	७२	४२
आगरा (अकबराबाद)	..	२७	११	७७	५३
आज़मगढ़	..	२४	६	८३	१०

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
आरा ..	२५	३५	८३	५०
अर्कांडु (अर्काट) ..	१२	५२	७९	२२
औरंगाबाद ..	१९	५४	७५	३३
इटावा ..	२६	४७	७८	५३
इन्दौर ..	२२	४२	७५	५०
इलचपुर ..	२१	१४	७७	३६
इलाहाबाद (प्रयाग) ..	२५	२०	८१	५०
इलोरा (इलूरू) ..	१९	५८	७५	२३
इल्लोर ..	१६	४३	८१	५१
उज्जैन (आवन्ती) ..	२३	११	७५	३५
उदयपुर ..	२४	३५	७३	४४
उरछा ..	२५	२६	७८	३८
ऊच ..	२९	११	७७	५०
कटक ..	२०	२०	८६	५
कड़प (कृपा) ..	१४	३२	७८	५४
कडालूर ..	११	४४	७९	५०
क़न्नौज ..	२७	४	७९	४०
कपूरथला ..	३१	२४	७५	२१
खगदला ..	१८	३०	७५	४१
करनाल ..	१५	४४	७८	२
करांचीबन्दर ..	२४	५१	६७	१६

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
करोली ..	२६	३२	७६	५३
कलकत्ता ..	२२	२३	८८	२८
कल्लीकोट ..	१६	२३	८५	११
कांगड़ा (नगरकोट) ..	३२	१५	७६	८
काठमाण्डु ..	२७	४२	८५	०
कान्हपुर ..	२६	३०	८०	१३
कारीकाल ..	१०	५५	७६	४४
कामाक्षा ..	२६	३६	६२	५६
कालपी ..	२६	१०	७६	४१
कालाबाग़ (कारबाग़) ..	३३	४	७१	१०
कालिंजर ..	२५	६	८०	२५
किशनगढ़ ..	२४	२८	७६	४४
किशननगर ..	२३	२६	८८	३५
कुंजवरम् (कांचीपुर) ..	१२	४१	७६	४१
कुमारी अन्तरीप ..	८	४	७७	४५
केदारनाथ ..	३०	५३	७६	१८
कोची (कोचीन) (कच्छा) ..	६	५१	७६	१०
कोटा ..	२५	५२	७५	४५
कोमेला ..	२३	२८	९०	४३
कोम्बकोनम्(कुंभाकोलम्)..	१०	५६	७६	२०
कोयम्मतूर ..	१०	५२	७७	- ५

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
कोलापुर ..	१६	१९	७४	२५
कोहाट ..	३३	४४	७१	१५
खंभात ..	२२	२१	७२	४८
खानगढ़ ..	२९	४०	७०	५०
खेड़ा ..	२२	४०	७२	४८
गड़ोची ..	३१	०	७९	०
गंजाम ..	१९	२१	८५	१०
गंतूर (मुर्तज़ानगर) ..	१६	१०	८०	३२
गया ..	२४	४९	८५	०
गाज़ीपुर ..	२५	३५	८३	३३
गुज़रात (पंजाब में) ..	३२	३३	७३	५०
गुड़गावां ..	२८	५०	७६	५०
गुरदासपुर ..	३१	५०	७५	४८
गुजरांवाला ..	३१	५०	७४	३
गोकाक ..	१६	११	७४	५८
गोरखपुर ..	२६	४६	८३	१९
गोलकुंडा ..	१७	१५	७८	३२
गोवा ..	१५	३०	७४	२
गोहाट ..	२५	५५	९१	४०
गोंड ..	२४	५८	८७	५२
ग्वालपाड़ा ..	२६	८	९०	३८

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
ग्वालियर ..	२६	१५	७८	१
घोंघा ..	२१	४०	७२	२३
चटगांव(इसलामाबाद) ..	२२	२२	९१	४२
चन्दर नगर ..	२२	४९	८८	२६
चंदेरी ..	२४	३२	७८	१०
चम्बा ..	३२	१०	७६	५
चम्पानेर (पवनगढ़) ..	२२	३१	७३	४१
चरनारगढ़ (चनार) ..	२५	९	८२	५४
चांदा ..	२०	४	७९	२२
चारखाड़ी ..	२५	२६	७९	४३
चिककूल ..	१८	१५	८४	०
चिकावालापुर ..	१३	२६	७७	४०
चितलदुर्ग (सीतलदुर्ग) ..	१४	४	७६	३०
चितूर ..	१३	१५	७९	१०
चित्तोड़गढ़ ..	२४	५२	७४	४५
चित्रकोट ..	२५	१०	८०	४५
चूका ..	२०	१६	८९	३४
चेरापूंजी ..	२५	४३	९१	४०
चेङ्गलपट्टू (सिंहलपेटा) ..	१२	४६	८०	१०
छतरपुर ..	३४	५६	७९	३५
छपरा ..	२५	४६	८४	४३

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
छिछरोली	..	३०	१५	७७	२१
छोटानागपुर	..	२३	३०	८५	३०
जगन्नाथ (पुरी)	..	१९	४९	८५	५४
जब्बलपुर	..	२३	११	८०	१६
जमनोत्री	..	३०	५२	७८	४०
जम्बू	..	३२	५६	७४	३८
जयन्तापुर	..	२५	१०	७९	३२
जयपुर (आमेर)	..	२६	५५	७५	३०
जहाज़पुर	..	२०	५२	८६	२४
जालंधर	..	३१	१८	७५	४०
जालोन	..	२६	१०	७९	१३
जींद	..	३०	१०	७६	५
जूनागढ़	..	२१	२९	७०	३८
जेसलमेर	..	२६	४३	७३	५४
जोधपुर	..	२६	१८	७०	०
जोनपुर	..	२५	४५	८३	०
जझर	..	२८	४१	७६	४४
झंग	..	३१	६	७८	२५
झालरापाटन	..	२४	३२	७६	१६
झांसी	..	२५	३२	७८	३४
झिंझी	..	२२	१६	७९	२८

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
टीहरी (गढ़वाल)	..	३०	२३	७८	२८
टीहरी (बुंदेलखंड)	..	२४	४५	७८	५२
टोंक	..	२६	१२	७५	३८
ठट्ठा	..	२४	४४	६८	१०
ठाणा	..	१९	११	७३	६
डीग	..	२७	३०	७७	१२
डूंगरपुर	..	२३	५४	७३	५०
ढाका (जहांगीर नगर)	..	२३	४२	९०	१३
तंजाउरू (तंजौर)	..	१०	४२	७९	११
तसीसूदन	..	२७	५	८९	४०
तालचेरी	..	११	४५	७५	५३
तिरकमबाड़ी	..	१०	६०	७९	५४
तिरुच्चिनापल्ली	..	१०	४२	७८	५४
तिरुनमाली	..	११	१२	७९	०
तिरुनेल्लुवली	..	८	४८	७८	१
तूतीकोरिन्	..	८	५७	७६	३६
तेल्लिचेरी	..	११	४५	७५	२३
त्रिबिकेरा	..	१२	३	७९	४३
त्रिबिंद्रम	.	८	९	७९	५०
त्रिम्बक	..	२०	१	७३	४२
त्रिवांकाडु	..	८	६५	७७	२३

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
थानेसर (कुरुक्षेत्र)	..	२९	५५	७६	४८
दतिया	..	२५	४३	७८	२५
दानापुर	..	२५	३०	८५	५
दार्जलिंग	..	२६	५६	८८	१३
दिनाजपुर	..	२५	३०	८८	४३
दिल्ली (शाहजहांबाद)	..	२८	४१	७७	५
देराइस्माईलखां	..	३१	५०	७०	३३
देराग़ाज़ीख़ां	..	२९	५०	७०	२०
देवगढ़ (बैद्यनाथ)	..	२४	३२	८६	४०
देवला	..	२४	३	७४	४४
देवास	..	२२	५९	७६	१०
देसा	..	२४	९	७२	८
देहरा	..	३०	१८	७८	१
दौलताबाद (देवगढ़)	..	१९	५०	७५	२५
द्वारका	..	२२	१५	६०	०
धारवार	..	२२	१०	७८	४२
धार (धारानगर)	..	२२	३५	७५	२४
धूलिया	..	२१	१	७४	४०
धोलपुर	..	२६	४२	७७	४४
नदिया	..	२३	२५	८८	२४
नरकर	..	२५	४०	८७	५१

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
नरसिंहपुर ..	२२	४०	७८	५२
नरायनगंज ..	२३	३७	९०	३५
नवाबगंज ..	२७	६	८१	२६
नसीराबाद ..	२६	२३	७९	३६
नागपुर ..	२१	९	७९	११
नागोर (बंगाले में) ..	२३	५६	८७	२०
नागोर (दक्खिन में) ..	१०	४५	७९	५४
नांदेड ..	१९	३	७७	३८
नाभा ..	३०	२६	७६	१२
नासिक ..	१९	५६	७३	५६
नाहन ..	३०	३३	७७	१६
नीमच ..	२४	२०	७५	०
नीमबहेड़ा ..	२४	३८	७४	५०
नूरपुर ..	३१	५८	७५	२२
नेल्लूरु ..	१२	४९	८०	१
पटना (अज़ीमाबाद) ..	२५	३७	८५	१५
पटियाला ..	३०	१६	७६	२२
पटुच्चेरी (पाण्डु चेरी) ..	११	५७	७९	५४
पण्डरपुर ..	१७	४२	७५	२६
पन्ना ..	२४	४५	८०	१३
पवना ..	२४	०	८९	१२

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
परतापगढ़	..	२४	२	७४	५१
पलामो	..	२३	४५	८८	१५
पाकपट्टन	..	३०	२१	७३	१६
पानीपत	..	२९	२२	७६	५१
पासपुर	..	३४	२०	७४	५५
पार्कर	..	२४	१५	७०	४०
पिंजोर	..	३०	४०	७६	५४
पिगडदादनख़ां	..	३२	३९	७२	४०
पिशोर	..	३४	६	७१	१३
पीलीभीत	..	२८	४२	७९	४२
पुरनियां	..	२५	२८	८८	१४
पुरुलिया	..	२३	२०	८६	५५
पूना	..	१८	३०	७४	२
फ़तहगढ़ (फ़र्रुख़ाबाद)	..	२०	२४	७९	२०
फ़तहपुर	..	२५	५६	८०	४५
फ़तहपुर गूगेरा	..	३०	५५	७३	५
फ़तहपुर सीकरी	..	२६	६	७७	३४
फ़रीदकोट	..	३०	२	७४	३३
फ़रीदपुर	..	२३	३२	८९	४३
फ़िरोज़पुर	..	३०	५५	७४	३५
बक्सर	..	२५	३५	८३	५०

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
बक्कूर	..	३१	३८	७०	४०
बगुडा	..	२४	५५	८९	२२
बंगलूर	..	१२	५०	७७	१८
बटाला	..	३१	४८	७५	६
बटिंडा	..	३०	१२	७४	४८
बड़ौदा	..	२२	२१	७३	२३
बदरीनाथ	..	३०	४३	७९	३९
बदाऊं	..	२८	४	७८	५८
बनारस (काशी)	..	२५	३०	८३	१
बम्बई	..	१८	५६	७२	५०
बयाना	..	२६	५०	७७	८
बरेली	..	२८	२३	७९	१६
बर्दवान	..	२३	१५	८७	५०
बलन्दशहर	..	२८	२५	७७	४३
बलहरी (बल्लारी)	..	१५	५	७६	५९
बलुआ	..	२२	४०	९०	४०
बलेश्वर	..	२१	३२	८६	५६
बस्तर	..	१९	३१	८२	२८
बहराइच	..	२७	३३	८१	३०
बहावलपुर	..	२९	१९	७१	२९
बाक़रगंज	..	२२	४२	८९	२०

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
बांकुड़ा ..	२३	५	८७	१३
बाग ..	२२	२६	७४	४५
बाड़ी (सावन्तबाड़ी) ..	१५	५६	७४	०
बाढ़ ..	२५	२८	८५	४६
बांदा ..	२५	३०	८०	२०
बांसबाड़ा ..	२३	३१	७४	३२
बारहभट्टी ..	२०	२०	४६	६
बारासत ..	२२	२३	८८	५६
बालासोर ..	२१	३२	८६	५६
बिजनौर ..	२९	२५	७८	१२
बिजयनगर ..	१५	१४	७६	३७
बिजावर ..	२४	३७	७९	३२
बिठूर ..	२६	४०	८०	८
बिदर ..	१७	४९	७७	४६
बिलासपुर ..	३१	१९	७६	४५
बिल्लूर (राय इल्लोर) ..	१२	५७	७९	११
बिहार ..	२५	१३	८५	३५
बीकानेर ..	२०	५७	७३	२
बीजापुर (बिजयपुर) ..	१६	४६	७५	४७
बुरहानपुर ..	२१	१९	७६	१८
बूढ़िया ..	३०	९	७७	२

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
बून्दी	..	२५	२८	७५	३०
वृन्दाबन	..	२३	१५	७७	५०
बेलगांव	..	१५	५२	७४	४२
बेतूल	..	२१	५५	७८	४
बेरागढ़	..	२०	१८	८२	५५
बेरीसाल	..	२२	४६	९०	१०
बोलिया	..	२४	२३	८८	४४
भक्कर	..	३१	३८	७१	४०
भड़ोंच	..	२१	४६	७३	१४
भरतपुर	..	२७	१०	७७	२३
भागलपुर	..	२५	१३	८६	५८
भातगांव	..	२७	४०	८५	८
भिलसा	..	२३	३३	७७	५५
भुज	..	२३	१५	६९	५२
भूपाल	..	२३	१०	७७	३०
मऊ (छावनी)	..	२२	३३	७५	५०
मंगलूर(कोड़ियालबन्दर)	..	१२	५३	७४	५०
मछलीबन्दर(मोसलीपट्टन)	..	१६	१	८१	१४
महाबलेश्वर	..	२२	१०	४५	३०
मगढवी	..	२२	५०	६९	३३
मराडी	..	३१	४०	७६	५३

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
मथुरा	..	२७	३१	७७	२३
मदुरा (मीनाक्षी)	..	९	५५	७८	१४
मनीपुर	..	२४	२०	९४	३०
मनेर (मोनिया)	..	२५	३९	८४	५२
मन्दराज (चीनापट्टन)	..	१३	५	८०	२१
मनसूरी	..	३०	३३	७७	५८
ममदोत	..	३०	४०	७४	२०
मरकांडा	..	१२	२६	७५	५०
मलौन	..	३१	१३	७६	४८
महाबलिपुर	..	१२	३६	८०	१६
महाबलेश्वर	..	१८	०	७३	३०
महीदपुर	..	२३	२९	७५	४६
मांझी	..	२५	४९	८४	३५
मांडू	..	२२	२३	७५	२०
मानिकयाल	..	३३	२८	७३	२५
मालदह	..	३४	५८	८०	५९
मालेरकोटला	..	३२	३०	७५	५५
मिट्ठनकोट	..	२८	५१	७०	१०
मियानी	..	२४	४४	५८	२१
मिरज़ापुर	..	२५	१०	८३	३५
मुक्तिनाथ	..	२९	९	८३	१८

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
मुंगेर ..	२५	२३	८६	२६
मुज़फ़्फ़र नगर ..	२९	२०	७७	४०
मुज़फ़्फ़रपुर ..	२६	२	८५	२८
मुरली (जसर) ..	२३	०	८९	१५
मुरादाबाद ..	२८	५१	७८	४९
मुर्शिदाबाद(मक़सूदाबाद) ..	२४	११	८८	१५
मुलतान ..	३०	९	७१	०
मुल्लापुर ..	२७	४१	८१	११
मुहम्मदी ..	२७	५८	८०	५
मेदनीपुर ..	२२	२५	८७	२५
मेरठ ..	२८	५६	७७	३८
मैनपुरी ..	२७	१४	७८	५४
मैसूर (महेशुर) ..	१२	१९	७६	४२
मोडवाडा ..	२३	४८	७१	१५
रंगपुर ..	२५	४३	८९	२२
रणथम्भोर ..	२६	०	७६	१८
रत्नगिरि ..	१७	२	७३	२५
राजगृह ..	२४	५८	८५	३५
राजमहल ..	२५	२	८७	४३
राजमहेंद्री ..	१६	५९	८१	५३
रामपुर (बिसहर) ..	३१	२७	८७	३८

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
रामपुर (रुहेलों का) ..	२८	४९	७८	५
रामेश्वर (सेतबन्ध) ..	९	१८	७९	२२
रायकोट ..	३०	३४	७७	४
रायबरेली ..	२६	१४	८१	६
रावलपिण्डी ..	३३	३६	७३	४५
रासमुअर्री(मुंजअन्तरीप) ..	२४	५१	६६	५६
रुरकी ..	२९	५६	७७	५८
रुहतासगढ़ (बिहारमें) ..	२४	३८	८३	५०
रुहतास (पंजाब में) ..	३३	०	७३	२०
रेवा ..	२४	३४	८१	१९
रोड़ी ..	३१	३८	७०	४०
रोहतक ..	२८	४०	७६	२०
लखनऊ ..	२६	५१	८०	५०
लन्धोर ..	३०	३३	७८	५८
लखवारी ..	३०	३७	७६	४८
लाहौर ..	३१	३६	७४	३
लुधियाना ..	३०	५५	७५	४८
लुहारडग्गा ..	२३	५	८५	[illegible]
लेया ..	३०	५८	७०	३०
लोहगढ़ ..	१८	४१	७३	३०
लोहूघाट की छावनी ..	२९	२५	८०	३

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
वज़ीराबाद	..	३२	२३	७३	५०
वालाजाहनगर	..	११	४०	७८	५
विजिगापट्टन (बिशाखपट्टन)		१७	४२	८३	२४
शाहजहांपुर	..	२७	५२	७९	४८
शाहनूर	..	१४	५९	७५	२६
शाहपुर (पंजाबमें)	..	३२	६	७२	२५
शाहाबाद	..	२७	४०	७९	५०
शिकम	..	२७	१६	८८	३
शिकारपुर	..	२७	३६	६९	१८
शिमला	..	३१	१३	७७	१८
शेलम	..	११	३०	७८	१३
शोलापुर	..	१७	४०	७६	३
श्रीनगर (कश्मीर)	..	३३	२३	७४	४०
श्रीरंगपट्टन	..	१२	२५	७६	४५
सक्कर	..	३१	३८	७०	४०
सबाटू	..	३०	५८	७६	५९
समथर	..	२५	५०	७८	५०
सम्भल	..	२८	३०	७८	२९
सम्भलपुर	..	२१	८	८३	३०
सरधना	..	२९	१२	७७	३१
सरहिन्द	..	३०	४०	७६	२९

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
सहसराम ..	२४	५८	८३	५८
सहारनपुर ..	२९	५७	७७	३२
सागर ..	२३	५८	७८	४७
सिवड़ी ..	२३	५४	८०	३२
सिवनी ..	२२	३	७९	३५
सितारा ..	१७	४२	७४	१२
सिरगूजा ..	२३	५	८३	३०
सिरोही ..	२४	५२	७३	१५
सिरींज (शेरगंज) ..	२४	५	७७	४१
सिलचार ..	२४	५८	९२	५०
सिलहट ..	२४	५५	९१	४०
सिहोर ..	२३	१५	७७	१०
सीताकुण्ड(चटगांव में) ..	२२	३०	९१	३६
सुकेत ..	३१	२०	७६	५८
सुगोली ..	२६	४६	८५	०
सुदामापुर (पुरबन्दर) ..	२१	३९	६९	४५
सुवर्णदुर्ग ..	१७	५३	७३	२०
सूरत ..	२१	११	७३	०
सोमनाथ(पट्टनसोमनाथ) ..	२०	५३	७०	३५
सोवारा (नसीराबाद) ..	२४	२६	९०	०
स्यालकोट ..	३२	३५	७४	२७

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
हज़ारा ..	३४	१	७३	६५
हज़ारीबाग़ ..	२३	४५	८५	३०
हमीरपुर ..	२६	०	८०	०
हरिद्वार ..	२९	५६	७८	१०
हस्तिनापुर ..	२९	९	७७	५५
हाजीपुर ..	२५	४१	८५	२१
हिसार ..	२८	५०	७५	२४
हुगली ..	२२	५४	८८	२८
हुशयारपुर ..	३१	३५	७५	५२
हैदराबाद (सिन्ध में) ..	२५	२२	६८	४१
हैदराबाद (दक्खिनमें) ..	१७	१५	७८	३५
होशंगाबाद ..	२२	४०	७७	५१

स्थान लखनेऊ मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने में छपी
अप्रिल सन् १८८८ ई० ।